ख्याल गायक अलीबख्श

डॉ. आभा जैन

हिंदी विभाग

राजकीय महाविद्यालय, थानागाजी (जयपुर)

लोकनाट्य के क्षेत्र में 'ख्याल' एक विशिष्ट अर्थ का वाचक है, इसका अभिप्राय है- ऐसा खेल, तामाशा या नाट्य जिसमें संगीत भी है। राजस्थान में 'ख्याल' लोकनाट्य की सुदीर्घ परंपरा रही है ।इनमें कुचामणी, चिड़ावी, अलीबक्षी आदि प्रमुख हैं। इन ख्यालों के नामकरण क्षेत्र या रचनाकार विशेष द्वारा विकसित शैली के आधार पर किये गये हैं।

अलीबक्षी ख्यालों के रचयिता अलीबख्श मुंडावर के जागीरदार थे। मुंडावर वर्तमान राजस्थान के अलवर जिले में तहसील मुख्यालय है। अलवर जिले के कवि भक्तों में अलीबख्श का नाम बड़े आदर और सम्मान के साथ लिया जाता है। इसका जन्म संवत् 1911 (ई. 1854) के आसपास मुंडावर में हुआ। ये मुंडावर के जागीरदार और रांगड़ा मुसलमान जाति के थे।'1 इस दौर में अलवर राज्य में राजा मंगल सिंह का शासन था ।"2 ये अलीबख्श राव कहलाते थे । इन्हें मुंडावर की जागीर मिली हुई थी। अलवर नरेश ने इनका परिचय 'प्रिंस ऑफ अलीबख्श ऑफ मुंडावर' कहकर दिया था। 3 स्वयं अलीबख्श ने 'ख्याल फसाना अजायब' में अपना परिचय मुंडावर के टीकावत राजपूत के रूप में दिया-

"राजपूत हूं टीकावत मेरा अलीबख्श है नाम, नगर मूंडावर सुबस बसिया, है मेरा निज धाम ।"4

उपर्युक्त संदर्भों से इनका मुंडावर का जागीरदारहोना पुष्ट है। जबकि जाति 'रांगड़ा मुसलमान' या 'टीकावत राजपूत' होने के कारण अस्पष्ट है। रेवती रमण शर्मा ने लोकश्रुति के आधार पर माना है कि मुंडावर व निकटवर्ती क्षेत्र के मुसलमान गायक चौहान राजपूतों से धर्मांतरित हुए थे, ये आजादी पूर्व तक गायकी से जुड़े रहे, ये सभी (रांगड़ा) अपने को चौहान वंश का मानते थे, पहनावा भी चौहान राजपूतों जैसा था,' 5 मुंडावर के चौहानों के धर्मांतरण का उल्लेख पिनाकी लाल ने भी किया है, "मुसलमान होने पर भी इस वंश में हिन्दू नाम और हिन्दू प्रथा का अब से (सन् 1943) कुछ पहले तक पूर्ण प्रचार रहा। "6 अलवर जिले के मेवों को भी गोत और पाल के आधार पर राजपूतों से जोड़ा जाता है। 'तारीख-ए-मेवात' में मौलाना अबू मोहम्मद अब्दुल शकूर ने इस तरह की सूची भी दी है।'7 अलीबख्श के ख्यालों में भी हिन्दू देवी देवताओं के साथ पीर आदि का स्मरण किया गया है, इससे यह संकेतित होता है इस क्षेत्र के मुसलमान धर्मांतरण के बावजूद राजपूत परंपरा से जुड़े अवश्य रहे किन्तु थे मुसलमान ही। अलीबख्श की मृत्यु पैंतालीस वर्ष की आयु में सं. 1956 (ई. 1899) में मानी जाती है । 8

इनकी विधिवत् शिक्षा के संबंध में कोई उल्लेख नहीं मिलता, रचनाओं के अंतर्साक्ष्य भी इस विषय में मौन हैं। रचनाओं से यह अवश्य ज्ञात होता है कि सूर, नंददास आदि कृष्ण भक्त कवियों की रचनाएंॅ इन्होंने पढ़ी थी, ख्यालों में संगीत का प्रयोग विधिवत् अध्ययन की अपेक्षा रखता है, किंतु यह मात्र अनुमान है, रेवती रमण जी ने लोक श्रुति के आधार पर माना है कि इन्होंने उर्दू प्राइमरी तक पढ़ाई की थी। अलीबख्श के गुरु के रूप में गरीबदास का उल्लेख मिलता है। ये रैणागर की घाटी का साधू था। रेवती रमण ने रैणागिरी और भूरासिद्ध का बारा इनका स्थान माना है। उन्होंने परशुराम चतुर्वेदी के हवाले से गरीबदास को दादूपंथी कहा है। स्वयं अलीबख्श ने गरीब दास का उल्लेख इस प्रकार किया है -"बन रहे झांप ढप ढोल दुलारे बरसे कंचन नूर । गरीब दास की महर से मेरा स्वांग खिले भरपूर ।"9

अंतस्साक्ष्य से यह स्पष्ट है कि गरीब दास साधू की अलीबख्श ने कृपा प्राप्त की। ये गरीब दास कौन थे यह अस्पष्ट है। उत्तरी भारत की संत परंपरा में आचार्य परशुराम चतुर्वेदी ने गरीब दास नामधारी चार संतों का उल्लेख किया है,

प्रथम-" दादू शिष्य गरीबदास सं. 1632 से सं. 1963" 10

द्वितीय- "गरीबदास घुड़ानी, सं 1774 से सं. 1835" 11

तृतीय- "बावरी पंथ के गरीबदास, गाजीपुर वाले समय 19 वीं से 20 वीं सदी" 12

चतुर्थ- "राधास्वामी गरीबदास, नेत्रहीन दिल्लीवाले, 20वीं सदी" 13

इनमें प्रथम और द्वितीय काल की दृष्टि से पूर्व के हैं, यद्यपि द्वितीय का प्रभाव दिल्ली, अलवर, नारनोल, रोहतक आदि में आज भी है । तृतीय और चतुर्थ स्थान की दृष्टि से दूर के हैं। चतुर्थ को यदि दिल्ली के कारण निकट का भी माने तो अलीबख्श की रचनाओं में गुरु के नेत्रहीन होने का उल्लेख तक नहीं मिलता। दादूपंथी साहित्य के विशेषज्ञ स्वामी नारायण दास जी ने दादूपंथ परिचय भाग -1, 2, 3 तथा राजस्थानी संत साहित्य परिचय में अलवर क्षेत्र के किसी गरीबदास का उल्लेख तक नहीं किया है, इससे स्पष्ट है कि ये (अलीबख्श के गुरु) गरीबदास कोई स्थानीय संत मात्र थे, दादूपंथी नहीं।

अलीबख्श विरचित निम्नलिखित ख्यालों की जानकारी मिलती है।

ये हैं -

1. श्री कृष्ण लीला
2. राजा नल का छड़ाव व नल का बगदाव
3. पद्मावत
4. फसाना-ए-अजाइब
5. निहाल दे
6. गुलबकावली
7. अलवर का शिफतनामा
8. शिवदान सिंह का बारहमासा
9. चंद्रावत

राजा नल का छड़ाव व नल का बगदाव को अलग- अलग भी मंचित किया जा सकता है, रेवती रमण जी ने इस तर्क से इन्हें दो रचनाएंॅ मानकर संगृहीत किया है, रामानन्द राठी भी इसी आधार पर उनके "दस सांग मानते हैं ।"14 राठी ने ख्याल के लिए सांग शब्द प्रयुक्त किया है । स्वयं अलीबख्श ने गरीबदास वाले पद में सांग शब्द प्रयुक्त किया है। ख्यालों की संख्या नौ ही माननी चाहिए क्योंकि बगदाव ख्याल से पूर्व ईशवन्दना आदि नहीं है यह अन्य सभी ख्यालों में मिलता है।

अलीबख्श के ख्याल वाचिक परंपरा में टूटे- फूटे सुरक्षित हैं। इनके मंचन की परंपरा लुप्त हो चुकी है। रेवती रमण ने प्रथम, द्वितीय (भाग 1 व 2) चतुर्थ व पंचम को गायकों से सुनकर प्रकाशित कराया है। गुलबकावली रेवाड़ी (हरियाणा) से प्रकाशित हुई थी, किन्तु इसकी प्रति उपलब्ध नहीं है। यह कहा जाता है कि अलवर

राजा अलीबख्श को अपना दरबारी बनाना चाहते थे, अलीबख्श अलवर रहे, किन्तु शीघ्र ही दरबारी गायक की पदवी से मुक्त होकर मुंडावर लौट गए, इसका दुस्परिणाम यह हुआ कि ख्यालों की तमाम जिल्दें महाराजा ने पुस्तकालय में जब्त करा दीं।'"15 ये जिल्दें अलवर पुस्तकालय में अनुपलब्ध हैं, संभवतः अलवर स्टेट के ग्रंथों के बीकानेर आर्काइब्ज में स्थानांतरण के समय में बीकानेर चली गयी, वहां के अलवर खंड में इनके संधान की अपेक्षा है, इससे ख्यालों के मूल पाठ का निर्धारण हो सकता है साथ ही विलुप्त रचनाएं सामने आ सकतीं हैं। अलीबख्श ख्याल गायकी मुंडावर में उनकी मजार में यदा-कदा अप्रैल में आयोजित की जाती है। ख्यालों की गायकी ने धीरे-धीरे भजन गायकी का रूप ले लिया है।

लोककलाकार श्रीकृष्ण लीला ख्याल को टुकड़ों के बतौर भजन गाते हैं। सांग - ख्याल अब देहात तक सीमित रह गये हैं, इनका वर्तमान रूप नहीं के बराबर व्यावसायिक है, ये कृषि से अवकाश के समय किसानों अथवा खेत मजदूरों की अथवा किसी जाति विशेष की मौसमी गतिविधि से अधिक नहीं है। 16

अलीबख्श के दो शिष्यों- गोपाल और पूरन का उल्लेख मिलता है। पूरन को संबोधित कम से कम दो रागिनी श्रीकृष्ण लीला में मिलती है। प्रथम महायुद्ध के आस-पास दीपचंद (हरियाणवी) ने अलीबख्श सांग परंपरा को पुनर्जीवित किया था। उन्होंने "पौराणिक, ऐतिहासिक आख्यान आदि से आगे बढ़कर सामयिक विषयों पर ख्याल लिखे।" 17 मुंडावर का निकटवर्ती होने के कारण रेवाड़ी आदि नगरों में अलीबख्श के ख्यालों का प्रचार अधिक हुआ, अलीबख्श के कम से कम दो ख्यालों में रेवाड़ी का उल्लेख है।" 18 निहाल दे ख्याल में रेवाड़ी के घंटेश्वर महादेव मंदिर तथा निकटवर्ती सय्यद की मजार का साथ- साथ स्मरण है।" 19 इस तरह के उल्लेखों के कारण अलीबख्श को सांप्रदायिक सद्भाव का रचनाकार कहा जाता है। अथ फसाना अजाइब की प्रारंभिक रागिनी में राम, लक्ष्मण, हनुमान आदि के साथ हजरत बारह हजारी पीर का स्मरण है। नल का घुड़ाव में भी दुर्गा स्तुति के साथ मलिक का नाम स्मरण मिलता है।

वाचिक परंपरा में सुरक्षित रहने के कारण ख्यालों की भाषा पर स्थानीय भाषा का पर्याप्त प्रभाव है। इनके ख्यालों में रेवाड़ी मुंडावर आदि राठ क्षेत्रों में प्रचलन के फलस्वरूप राठी का, पारसी थियेटर के प्रभाव से उर्दू का व क्षेत्र के कारण मेवाती का पर्याप्त प्रभाव है। राठी शब्दों में - स, कित, नै, पलटा करके उल्टा आओ मत ना हिम्मत हारो, उर्दू के शब्दों - फरयाद, बारबार, खता, जुल्म आदि मेवाती शब्दों में मारूंगो, भाण्जो, गोड़ो देगो , बगदी, पहलोटी का लाल आदि शब्द उदाहरण स्वरूप लिए जा सकते हैं । अलीबख्श के कृष्ण एक स्थल पर न्यार (चारा) बेचते हुए कृषक जीवन से जुड़ जाते हैं।" 20 ख्यालों की भाषा का विवेचन मूल पाठ के निर्धारण के साथ करने की आवश्यकता है।

श्रीकृष्ण लीला ख्याल में सूर आदि कृष्ण भक्त कवियों का पूरा प्रभाव है। कहीं कहीं तो अनुवाद भर प्रतीत होता है, सूर के प्रसिद्ध पद "बूझत श्याम कौन तू गोरी" को अलीबख्श ने इस रूप में लिखा है -

"एक दिन मग में मिल गए राधे और घनश्याम, कौन गांव में बसत हो और क्या तुम्हारो नाम, क्या तुम्हारो नाम खेलने कबहूं न हम संग आती, मात पिता का नाम कहौ और कौन तुम्हारो नाती।"21

अलीबख्श ने भागवत व सूर की कृष्ण कथा को लोकनाट्य की आकांक्षा से परिवर्तित भी किया है, ख्याल श्रीकृष्ण लीला में राधा यशोदा की गोद भरती हैं, और राधा यह सब अपनी मां को बताती है।" 22 रोगग्रस्त राधा का जहर उतारने श्रीकृष्ण दिल्ली का वैद्य बनकर आते हैं,

उनकी मुद्रा पारसी रंग शैली के अनुरूप है- पाजामा पायन तंग पायचा, बगल बादड़ी मारी कुछ बूटी दवाई, डिब्बा भर फेट जमाई लेपन की मालस करन काम के सूंघन की ओर खाने की। छोटी सी घंटी हाथ; हात में कंठी है सोने की ।

दिल्ली से आयो वैद्य रानी जी तुरत फुरत विष झारे ।" 23

नाटकीयता के अतिआग्रह से रचना कमजोर और कहीं कहीं हास्यास्पद तक हो गई है -

तोर पट्ठा पकड़कर खेंचलूं सगरे उपारूं बाल ।

छाती उपर बैठकर स तेरा धड़धड़ चीरूं गाल।" 24

यह प्रेमपूर्ण (?) संवाद गूजरी का कृष्ण के प्रति है ।

अलबख्शी सांगो का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष है- गीत-संगीत। शरीर की समूची ताकत से आवाaज खींचकर, सधी हुई लय और ताल के साथ जब अलीबख्श की भेंट मांझ ठुमरी दादरा, गाई जाती है तो आज भी श्रोता अभिभूत हो उठते हैं।" 25 संगीतात्मक अभिव्यक्ति के साथ साथ भंगिमाओं का योग ख्यालों के सम्प्रेषण को समर्थ बनाता है। इन ख्यालों में रागिनी वाले अंश संगीत पक्ष के कारण अधिक लोकप्रिय भी हुए। लंबी तान भरकर गाना वह बाधा भी रही जिसने इन्हें क्रमशः मंचन से दूर किया। ये ख्याल विलम्बित लय में गाये जाते थे जिनमें बड़े दमखम की जरूरत होती थी। अलीबख्श ख्याल लोकगायकी में ख्याल लोकनाट्य से जुड़ा यह उसकी उपलब्धि थी ।

परवर्ती दौर में विदेशी प्रभाव तथा नवीन रंगमंच के विकास के साथ ख्याल आदि प्राचीन पद्धतियां एक सीमा तक अपर्याप्त हो गई है। पौराणिक ऐतिहासिक लोककथा आख्यान आदि तक सीमित ख्याल पिछड़ते चले गए। अन्तः संघर्ष की अपेक्षा शैलीबद्ध पद्धति से अभिनय के आग्रह ने इन्हें सीमित किया फिल्मों आदि ने भी इसमें मदद की। जहां तहां गायकी के रूप में बची शैली को मंचन से जोड़कर पुनर्संस्कारित कर आधुनिक मंच के अनुकूल बनाने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. विनय (पत्रिका) अलवर अंक, राजर्षि कालेज अलवर 1969, पृ. 75
2. मंगल सिंह का शासन सन् 1874 से 1892 ई. द्रष्टव्य अलवर राज्य का इतिहास, पिनाकीलाल सन् 19, अलवर पृ. 71
3. मत्स्य प्रदेश की हिन्दी साहित्य को देन, डॉ. मोतीलाल गुप्त जोधपुर, पृ. 16
4. ख्याल अलीबक्श, सं. रेवतीरमण शर्मा, भोपाल,2001, पृ. 244
5. अलवर राज्य का इतिहास, पृ. 12
6. विनय पृ. 16
7. ख्याल अलीबख्श पृ. 12,16,41,47,53,59,75,76,163
8. द्वाभा आर्ट्स कालेज पत्रिका अलवर में प्रकाशित डॉ. जीवन सिंह का लेख, पृ. 33
9. उत्तरी भारत की संत परंपरा, परशुराम चतुर्वेदी, सं. 2008, पृ. 432,488,607,673
10. राठ रामानंद राठी बहरोड़, पृ. 66
11. रंगदर्शन नेमीचंद्र जैन जी पृ. 111
12. सेना में भरती होने के लिए लिखा - भरती हो ले रे, तेरे बाहर खड़े रंगरूट
13. रिवाड़ी बनी रहे गुलजार,तमाशा हुआ बीच बाजार (नल का बगदाव की अंतिम पंक्ति)
14. अलीबख्श थारा दास कदीमी, आया रेवाड़ी फेरूं (निहालदे)ख्याल अलीबख्श पृ. 161,162
15. तू डोलेगी दही बेचती, मै बेचूंगो न्यारा । तुझसे मेरी लगी मोहब्बत, छोड़ दिया घर बार ।। श्रीकृष्ण लीला ख्याल अलीबख्श, पृ. 42